डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

V.V.I

(19) प्रश्न:→ 1660 की पुनः स्थापना के स्वरूप और महत्व पर प्रकाश डाले।

उत्तर:→ 1660 ई० का पुनः स्थापना का इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। क्यो कि पुनः स्थापना के फलस्वरूप ही इंगलैंड के लोगों के दिल और दिमाग में महान क्रांतिकारी परिवर्तन की लहर दौड़ गयी। जिसके फलस्वरूप इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास का काया पलट हो गया।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि इंगलैंड का शासक चार्ल्स द्वितीय ने समय का नारी को अच्छी तरह पहचान लिया। इसलिए वे अपने पिता का चरण चिन्हों का अनुसरण नही किया। क्यो कि इस बात को वह भली - भाँति से जानता था कि इंगलैंड में संविधान के इच्छानुसार सासन करना उचित नही होता है। उसका कहना था कि कानून और सिद्धान्त में राजा सबसे ऊपर है। लेकिन व्यवहारिक तौर पर राजा का स्थान पार्लियामेण्ट ने ले लिया अब वह देश का वास्तविक धन नही था बल्कि सर्वोच्च था। इतना ही नही अब इंगलैंड के सभी राजनैतिक उलझाने को सुलझाने का अधिकार पार्लियामेण्ट को ही था दूसरी बात यह भी है कि इतिहास इसका साक्षी है। सदा साक्षी रहेगा। 1660 ई० की पुनः स्थापना के बाद किसी भी राजा ने पार्लियामेण्ट के विचारों का उल्लंघन नही किया। जेम्स द्वितीय ने हिम्मत कर के पार्लियामेण्ट की बातों का

उल्लंघन किया तो इसकी कड़ी सजा के रूप में उन्हें राजगद्दी छोड़नी पड़ी। अतः इस घटना को ध्यान में रखते हैं। इसलिए 1660 ई० की पुनः स्थापना को पार्लियामेण्ट की क्रांति भी कहा जा सकता है।

1660 ई० की पुनः स्थापना में राजा का तो पुनः स्थापन हुआ ही लेकिन पार्लियामेण्ट का पुनः स्थापन नही हुआ साथ ही 1660 ई० के बाद भी इसके लिए कोई प्रयत्न नही किया। नतीजा यह हुआ कि राजा पुनः स्थापना के बाद अधिकारों के क्षेत्र में अपने आप को पंगु महशुश करने लगा। ऐसी स्थिति में 1660 ई० की पुनः स्थापना को एक समझौता भी कह सकते है। क्योंकि शब्द को सही अर्थ में सही लगाने में प्रयास 1660 ई० में भी किया गया। प्रयास तो वैसे इसके पहले भी किये गये। लेकिन पहले का सभी प्रयास निरर्थक साबित हुआ। 1660 ई० के पुनः स्थापना से हमें यह पता चल जाता है कि इंगलैण्ड में कौन बड़ा है। राजा या प्रजा ऐसी स्थिति में हम बाहर से झाकते थे कि हमें ऐसा लगता था कि वहाँ राजा बड़ा है। लेकिन हम व्यवहारिक तौर पर हम अन्दर जा कर देखते थे कि पार्लियामेण्ट बड़ा लगता था क्योंकि कानुन बनाने में राजा का प्रत्यक्ष ~~प्रत्यक्ष~~ रूप से कोई अधिकार नही था।

1660 ई० के पुनः स्थापना के फलस्वरूप इंगलैंड के संवैधानिक का विकास हुआ और वैधानिक राजतंत्र की परम्परा

चल पड़ी। क्योंकि पुनः स्थापना से साबित कर सकते हैं कि इंगलैंड के गणतंत्र पर इंगलैंड के संवैधानिक राजतंत्र की छाप पड़ती है। दूसरी बात यह भी है कि 1660ई० की पुनः स्थापना एक ऐसी घटना मानी जाती है। जिसका एक ही साथ दो परिणाम निकाला पहले तो इसमें राजा और सभी पुरानी स्थापना का पुनः स्थापन हुआ इसके साथ ही साथ चर्च का पूर्ण स्थापन हो गया। इसलिए तो इसको दोड़ी पुनः स्थापना के नाम से जाना जाता है। इतना ही नहीं इसलिए तो चार्ल्स द्वितीय राष्ट्रीय चर्च के रूप में दोनों दलों को सम्मलित कर दिया। बाद में चलकर उन्होंने कनवेंशन पार्लियामेण्ट जैसे संविधान को पेरित किया। वैसे यह बात अलग है कि इसके बाद करवाने के बावजूद भी अन्त तक सफलता नहीं मिली।

1660 ई० पुनः स्थापना का दूसरा महत्व यह भी है कि बहुत सारे इतिहास कार आधुनिक संसदीय का सहकारी बना। श्री गणेश यही मानते हैं। वास्तव में मंत्री मंडल की प्रथा अलगत की परम्परा और पार्लियामेण्ट के प्रति मंत्री मंडल में मंत्रीयों की जबाहदेही की शुरूमात इसी समय से हुई थी। लेकिन यह भी सही है कि जिन-जिन चीजो की कमी 1660 ई० में पूरी पुनः स्थापना के बाद हुई थी पूरती उसकी पुरती 1688 ई० की गौरवपूर्ण क्रांति ने लोग पार्लियामेण्ट के अधूरे कार्य को पुरा

किया क्योंकि अब शक्ति राजा के हाथ से निकल कर पार्लियामेण्ट के हाथ मे चली आयी थी साथ ही साथ अब बदली हुई परिस्थिति मे वहाँ हाऊस ऑफ कोमन की शक्ति बढ़ गई थी। इसी महान परिवर्तन को देखकर लोग पुनः स्थापना का घटना मानते है। घटना की श्रेणी में रखते है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या यह पुनः स्थापना क्रांति थी। इस संबंध मे कुछ विद्वानो ने पुनः स्थापना को क्रांति कहा है। उसका कहना है। कि Restoration is always a revolution वास्तव मे यह कथन सत्यता के करीब है। क्योंकि सधारण तथा लोग पुनः स्थापन को क्रांति कहते है। क्रांति का भी अर्थ परिवर्तन होता है। लेकिन यही पुनःस्थापना का मतलब पुरानी प्रथाओं की पुनरावृति है। ऐसी स्थति मे 1660ई० की पुनःस्थापना को हम क्रांति नही कह सकते है। क्योंकि पुनः स्थापना ~~को हम क्रांति नही कह सकते है~~ के फलस्वरूप इंगलैंड मे कोई संवैधानिक परिवर्तन नही हुआ था। राजा की पद की स्थापना अवश्य हुई। लेकिन उसके अधिकार मे कोई परिवर्तन नही आया। दुसरी बात यह भी है कि वहाँ पार्लियामेण्ट का कोई विरोध करने वाला नही था। इसीलिए तो पार्लियामेण्ट की वैधानिक सत्ता पुर्णरूपेण व्यवस्थित रह गई। अतः हम कह सकते है कि पुनः स्थापना पार्लियामेण्ट की शक्ति वृद्धि के रूप मे एक क्रांति थी। क्योंकि बाहर से इसमे कोई विरोध नही हुआ था बल्कि राजा

के अधिकारों को सिमित कर दिया गया था। वैसे बाहरी तौर पर हम यदि देखते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि इसमें न तो राजा के अधिकारों को सीमित किया और न तो पार्लियामेंट लेकिन वास्तविकता यह है कि राजा के नये सीरे को पुनः यहाँ स्थापित किया गया। इसलिए तो इसे पुनः स्थापना कहा जाता है।

इस प्रकार निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 1660 ई० की पुनः स्थापना का इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित है। जब हम इसके स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डालते हैं तो हमें ऐसा लगता है कि इसके बाद इंगलैंड के लोगों के दिल और दिमाग में क्रांतिकारी परिवर्तन हो गया जिसके फलस्वरूप इंगलैंड के संवैधानिक इतिहास के रूप रेखा तैयार हुई। या हम ऐसा भी कह सकते हैं कि 1660 ई० की पुनः स्थापना के परिणाम स्वरूप ही इंगलैंड का संवैधानिक संविधान का विकास हुआ इसीलिए तो इसका बड़ा ही महत्व है।

———x———